फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 150 दिसम्बर 2000

रात को व्हर्लपूल अपनी शुद्धि करती है और रिजेक्शन के प्लास्टिक-पेन्ट-रसायन थोक में फैक्ट्री के सामने जलवा कर होलसेल प्रदूषण फैलाती है।

स्वागत है ! स्वागत है !

गुरेरा इन्डस्ट्रीज मजदूर : "मैं दस- बारह कम्पनियों में ड्युटी कर चुका हूँ। यहाँ भी अब दो दिन बाद ब्रेक कर देंगे, निकाल देंगे। हर जगह 1200- 1400- 1600 रुपये महीना में ही काम करना पड़ा है। मैं तो खूब तोड़- ताड़ करता हूँ। जहाँ भी लगा हूँ वहीं मैनेजमेन्ट को खूब तँग किया है और अपने मस्त रहा हूँ। मुझे पता है कि परमानेन्ट तो करेंगे नहीं फिर क्यों डरूँ। मेरी तरह काफी ज्यादा लोग करें तो कम्पनियाँ कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये वरकर रखना भूल जायें।"

अप्रेन्टिस वरकर : "एस्कोर्ट्स के सी एच डी प्लान्ट में अप्रेन्टिसों को सिखाने की बजाय मैनेजमेन्ट ने उत्पादन में लगा दिया है। इन्सपैक्टर आ कर परमानेन्ट वरकरों की तरह ही अप्रेन्टिसों के दो पीस चेक कर जाता है और हमें 8 घण्टे जुते रहने को बोलते हैं। एक दिन दो पीस चेक होने के बाद एक अप्रेन्टिस ने 11 पीस छोटे बना दिये – बड़े रहते हैं तो उन पर और काम करके ठीक किया जा सकता है लेकिन छोटे होने पर वे कबाड़ा हो जाते हैं। भारी नुकसान पर मैनेजर गुस्से से आग - बबूला हो गया। मैनेजर और इन्सपैक्टर की नोंक- झोंक में हमें खूब मजा आया। आखिर में इन्सपैक्टर ने जब कहा कि वह हर अप्रेन्टिस के पास 8 घण्टे खड़ा नहीं रह सकता क्योंकि सब वरकरों के पीस उसे चेक करने पड़ते हैं तब मैनेजर चुप हो गया।"

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "भाई कैजुअल ही समझो। न ई. एस.आई. कार्ड है न फण्ड की पर्ची। रोज 10 घण्टे की ड्युटी अनिवार्य बना रखी है। महीने के 1400 रुपये देते हैं। हम मुँह बन्द रखते हैं पर हम मुर्दे नहीं हैं – हाथों से हम कम्पनी की ऐसी- तैसी करते रहते हैं। कम्पनी के घुटने टिकाने में हमें देर नहीं लगती पर यह तो हम में से ही कुछ की चमचागिरी है कि मैनेजमेन्ट अन्धेरगर्दी कर पा रही है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "हमें 8 घण्टे खड़े रखने के लिये सी एच डी प्लान्ट में हाइड्रोलिक असेम्बली से मैनेजमेन्ट ने स्टूल हटवा कर कबाड़े में फिंकवा दिये। टी- ब्रेक में खड़े- खड़े चाय पीने को कहा और चाय के वक्त मैनेजर लोग असेम्बली में आ कर खड़े होने लगे। हम लोगों ने फर्श पर लाइन में आलथी- पालथी मार कर बैठना और चाय की चुस्कियाँ लेना आरम्भ किया। टुकर- टुकर देखते मैनेजर जब कहते कि चाय खड़े हो कर पीओ तो हम कहते कि कम- से- कम चाय तो आराम से पीने दो साहब। मैनेजमेन्ट ने ट्रान्सफर किये। जिन्हें भी असेम्बली में भेजा वे चाय के समय सब के साथ आलथी- पालथी मार कर लाइन में बैठ जाते। शर्मा- शर्मी मैनेजरों ने टी- ब्रेक में असेम्बली में आना बन्द कर दिया। मैनेजमेन्ट ने कबाड़े से स्टूल वापस हाइड्रोलिक असेम्बली में पहुँचा दिये हैं।"

इन्डो-ब्रिटिश गारमेन्ट्स मजदूर : "राहत के लिये हम ने एक यूनियन का पल्लू पकड़ा था। यूनियन ने हमें नुकसान पहुँचाया। हमारे साथी नौकरी से निकाल दिये गये, उनका केस चल रहा है। हम ने यूनियन से नाता तोड़ दिया। अपनी समस्याओं से निपटने के लिये अब हम आपस में तालमेल रखते हैं और हम ने एक कमेटी- सी बना रखी है।"

झालानी टूल्स वरकर : "मैनेजमेन्ट और मजदूर की सोच का एक ही सिक्के के दो पहलू रहने वाला दायरा हमारे लिये बेड़ी- हथकड़ी है। जब तक हम मजदूर सिर्फ मजदूर के तौर पर सोचेंगे तब तक हम इस दायरे से बाहर निकलने की राहें नहीं बना पायेंगे। मैनेजमेन्टों और मजदूरों के बीच विरोध अनिवार्य हैं और खटपटें तो होती ही रहेंगी। लेकिन, अगर हमें मजदूर रहना है तो हमें कम्पनियाँ- फैक्ट्रियाँ चाहियें ही, जबकि कम्पनियों- फैक्ट्रियों में हमारी दुर्गत ही दुर्गत है। नियति- सी लगती, होनी- सी लगती इस दुर्दशा से कैसे पार पायें? इसके लिये हमें मात्र मजदूर की बजाय इन्सान के तौर पर सोचना होगा। इन्सान बनना है तो हमें कम्पनियाँ- फैक्ट्रियाँ नहीं चाहियें। नई समाज रचना के प्रश्न हम तब उठायेंगे और उनके समाधान की राहें बनायेंगे।"

✶ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
✶ a ballad against work
✶ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

इसरेखा

12 अगस्त 1990 को पँचकुला में खेलने गई 14 वर्षीय रुचिका से वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने छेड़खानी की। लिखित शिकायत पर हरियाणा के मुख्यमंत्री ने राज्य के पुलिस प्रमुख को जाँच के लिये कहा। पुलिस प्रमुख की जाँच के आधार पर राज्य सरकार ने आई.पी.एस. अधिकारी के खिलाफ केस दर्ज करने का आदेश दिया। आदेश धरा रहा। 13 जून 1992 को सरकार का कानून- विधि विभाग जागा, एफ. आई. आर. दर्ज करने की सिफारिश की।

एक्शन आरम्भ हुआ। रुचिका के छोटे भाई के खिलाफ हरियाणा पुलिस ने 6 सितम्बर 92 को कार चोरी के मामले दर्ज करने शुरू किये और 30 अगस्त 1993 तक लड़के के खिलाफ 6 एफ. आई. आर. दर्ज की। 14 से 17 हुई रुचिका ने आत्महत्या कर ली।

1994 के आरम्भ में हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव ने पुलिस अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की फिर सिफारिश की। फिर वही ढाक के तीन पात।

रुचिका की सहेली के माता- पिता ने जुलाई 1997 में पँजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की। हाई कोर्ट ने केन्द्रीय जाँच ब्यूरो को जाँच करने का आदेश दिया। सी. बी. आई. ने जाँच के बाद 17 नवम्बर 2000 को पुलिस अधिकारी के खिलाफ अदालत में आरोप- पत्र दाखिल किया।

1990 के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अब हरियाणा राज्य पुलिस के प्रमुख हैं, डायरेक्टर- जनरल पुलिस हैं।

लुधियाना से .....

"मैंने **गुरदीप आटो इन्डस्ट्रीज**, दशमेश नगर में 1992 से सितम्बर 97 तक लगातर कार्य किया। समय- समय पर छुट्टी ले कर मैं घर जाता रहा। पक्के रजिस्टर पर साइन करा कर कम्पनी हिसाब लिया दिखाती रही लेकिन इस बात की मुझे जानकारी नहीं हो सकी। अक्टूबर 97 में अचानक हम दो आदमियों को हिसाब लेने को बोले। हम हिसाब लेने गये तो एक का पूरा- पूरा हिसाब दे दिया और मुझे लगे दौड़ाने – 25 को आना, 10 को आना। मजबूर हो कर

(बाकी पेज चार पर)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून हैं – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 1914 रुपये 86 पैसे , अर्ध- कुशल (क) को 1964 रुपये 86 पैसे , अर्ध- कुशल (ख) को 1989 रुपये 86 पैसे , उच्च कुशल मजदूर को 2114 रुपये 86 पैसे कम से कम ; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले ; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर , आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट ; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना ,तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं , ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से ; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड , मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना , हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना ; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई. ; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान , बराबर वेतन ;● ....

सुपर आटो (इण्डिया) मजदूर : "300 का काम है – 75 परमानेन्ट , 125 कैजुअल ,100 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। 5- 10 साल से काम कर रहे कैजुअल। ओवर टाइम काम अनिवार्य , पेमेन्ट सिंगल रेट से। दो साल फण्ड की पर्चियाँ मिली , इधर 27 महीनों से फण्ड जमा नहीं किया है। हर साल कोरा कागज , टिकट लगा कागज, लैटर पैड वाला कागज और ई.एस.आई. कागज पर हर मजदूर को दस्तखत करने पड़ते हैं।"

फर आटो वरकर : "बरसों से काम कर रहे मजदूरों को मई 99 में जबरन ठेकेदार के मजदूर बना दिया। अब फैक्ट्री में कार्यरत ज्यादातर वरकर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हुये हैं। तनखा 28- 30 तारीख को जा कर मिलती है।"

स्काईटोन इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "ओवर टाइम काम की पेमेन्ट परमानेन्टों को डेढे रेट से और कैजुअलों को सिंगल रेट से है। बोनस में भी दुभान्त की है – परमानेन्टों को 17 प्रतिशत और कैजुअलों को 8.33 प्रतिशत।"

पी.डी. इंजिनियरिंग वरकर : "हम 45 में से 20 की ही ई.एस.आई. और पी.एफ. हैं। कुछ को महीने का वेतन 1400 रुपये ही।"

जी.बी.एम. मजदूर : "4 परमानेन्ट हैं जिनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं , बाकी 80 मजदूरों से तो ऐसे ही काम लेते हैं। 1200- 1400- 1600- 1800 रुपये तनखा है।"

सागर शूज वरकर : "हैल्परों को 1400- 1500 रुपये महीना। कारीगर हों चाहे हैल्पर , ज्यादातर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और प्रोविडेन्ट फण्ड तो किसी का नहीं है।"

हिन्द हाइड्रोलिक्स मजदूर : "तनखा घण्टे के हिसाब से है: 35 ,25 ,20 , 15 ,10 ,7 रुपये प्रति घण्टा। ज्यादातर मजदूरों को ई. एस. आई. कार्ड और पी. एफ. की पर्ची नहीं।"

एलपिया वरकर : "रविवार को भी छुट्टी नहीं। हर रोज 12 घण्टे ड्युटी करना अनिवार्य।"

के. डी. आर. इन्डस्ट्रीज मजदूर : "हैल्परों को 1000- 1500- 1600 रुपये महीना। ई.एस. आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. पर्ची नहीं।"

विक्टोरा टूल्स वरकर : "हैल्परों को 1500 रुपये महीना। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. पर्ची नहीं।"

युनाइटेड ऑयल मिल मजदूर : "40 में से 10 परमानेन्ट। 30 को न ई.एस.आई. कार्ड , न फण्ड की पर्ची।"

क्लच आटो वरकर : "हम कैजुअलों को निकाल देते हैं तब हमारी बाकी रहती तनखा और ओवर टाइम काम के पैसे फँस जाते हैं। गेट पर कहते हैं कि हमारा कोई रिकार्ड नहीं है और फैक्ट्री के अन्दर जाने नहीं देते। प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे निकलवाने का फार्म भी मैनेजमेन्ट भर कर नहीं देती और हमारे पास कोई सबूत- नम्बर होता नहीं। लगता है कि हमारे फण्ड के पैसे मैनेजमेन्ट जमा ही नहीं कराती।"

रिंट मिट वे मजदूर : "हैल्परों की तनखा 1400- 1500 रुपये। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , फण्ड की पर्ची नहीं।"

बोल्टन इण्डिया वरकर : "ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअलों को 1400- 1500 रुपये महीना। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. की पर्ची नहीं।"

इंडियन गैरेज मजदूर : "कैजुअल वरकरों को 1400- 1500 रुपये महीना। ई. एस. आई. कार्ड नहीं। परमानेन्ट वरकरों को भी प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं।"

नटराज इन्डस्ट्रीज वरकर : "जो परमानेन्ट हैं उन्हें भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं , फण्ड की पर्ची नहीं। हर वर्ष 50- 100 रुपये वेतन में बढाते थे पर तीन साल से एक पैसा नहीं बढा रहे।"

कर्मा इंजिनियरिंग मजदूर : "ई.एस.आई. कार्ड किसी वरकर को नहीं दिया है। एक लड़के भीम का पैर कट गया तब साथ के साथ उसका ई.एस.आई. कार्ड बनवा दिया। इलाज के बाद भीम को नौकरी से निकाल दिया।"

सिम्पलैक्स वरकर : "अक्टूबर का वेतन 16 नवम्बर को जा कर दिया।"

हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज मजदूर : "परमानेन्टों का भी बिना आरोप- पत्र दिये गेट रोक देते हैं , नौकरी से निकाल देते हैं। कैजुअलों को ई.एस. आई. कार्ड नहीं , फण्ड की पर्ची नहीं और तनखा 1200- 1400- 1500 रुपये।"

गुडईयर वरकर : "हर शिफ्ट में परमानेन्टों से ज्यादा कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर हैं। मैनेजर- सुपरवाइजर गाली देते हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड निकलवाने का फार्म भरने में कैजुअलों को मैनेजमेन्ट बहुत परेशान करती है। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अक्टूबर की तनखा आज 17 नवम्बर तक नहीं दी है।"

इन्डीकेशन मजदूर : "सस्पैन्ड करने के बाद मैनेजमेन्ट ड्युटी पर लेती है तब वरकर से लिखवा लेती है कि निलम्बन के दौरान के पैसे नहीं लूँगा।"

डी.एस. बोइंग वरकर : "हैल्परों को 1200 और ऑपरेटरों को 1600- 1900 रुपये महीना। बहुतों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं और फण्ड की पर्ची 2- 4 को ही।"

परफैक्ट एबरेसिव मजदूर : "35- 40 में 5- 6 ही परमानेन्ट और उनकी भी ई.एस.आई. ही कटती है ,फण्ड नहीं। तनखा 1300- 1400 ।"

त्रिकुटा मैटल वरकर : "दस्तखत ज्यादा पर करवाते हैं लेकिन हैल्पर को 1000 और ऑपरेटर को 1500 रुपये महीना देते हैं। बच्चों को भी काम पर लगा रखा है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✱ बिजली कभी कड़के , कभी दमके , कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये ; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के , शान्त मन से , ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

लड़के [illegible] गवाह हैं।

क्या यही जिन्दगी है ?

ओखला जाता मजदूर : " सुबह अन्धेरे में घर से निकल पड़ते हैं और रात को अन्धेरे में घर लौटते हैं। ड्युटी के लिये आने- जाने और ड्युटी करने में पूरा दिन निकल जाता है। यही जिन्दगी बन गई है।"

वर्कशॉप वरकर : " पिताजी ने रिक्शा चला कर हमें पाला। मैं गाँव में रहते हुये नहरों से मिट्टी निकालने का काम करने लगा। पिताजी का एक पैर खराब हो गया तो मुझे नौकरी के लिये शहर आना पड़ा। यहाँ आये 4 साल हो गये हैं और अभी तक वर्कशॉपों में ही काम मिला है। आठ घण्टे के 1200 देते हैं और रोज 12 घण्टे काम करना पड़ता है। जिस दिन काम नहीं होता उस दिन के पैसे नहीं। नहर पर दिहाड़ी से भी मैं यहाँ ज्यादा परेशान हूँ। लेकिन गाँव जाता हूँ तब इज्जत का भूत मेरे ऊपर इस कदर सवार हो जाता है कि झूठ पर झूठ बोलता हूँ और कहता हूँ कि फरीदाबाद में मजे में हूँ, अच्छी कमाई कर रहा हूँ।"

अँगूठा बचा है। छह महीने पहले मैनेजमेन्ट ने जाल बिछाया। हड़ताल दिखा कर डी.एस. डीजल के रोल पर हम जो 16 परमानेन्ट वरकर थे उन सब को गेट बाहर कर दिया। श्रम विभाग ने मैनेजमेन्ट की पूरी- पूरी मदद की। अब हमारा मामला चण्डीगढ गया है। कोर्ट- कचहरी को कौन नहीं जानता ? 27 साल खटने के लिये हाथ कटाने के सिवा मुझे क्या मिला ?"

नूकेम वरकर : "अगस्त- सितम्बर- अक्टूबर की तनखायें एन एम टी एल में हमें आज 17 नवम्बर तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दी हैं। उत्पादन जारी है। मैनेजमेन्ट कहती है कि मशीनें बिकेंगी तब तनखा देगी ..... मशीनें बिक जायें तब हम रोटी खा लें, इस बीच हवा पर गुजारा करें। कथा है कि दधीच से हड्डियाँ ले कर और हड्डियों से वज्र बना कर युद्ध जीता गया था। संस्कारवान मैनेजमेन्ट हमारी हड्डियों को गला कर मण्डी में अमर रहने के सपने देख रही है।"

आयशर ट्रैक्टर मजदूर : " गले पर छुरी चल देती है। फिर भी कुछ हैं जो कहते हैं कि मजदूर बहुत जल्दी उतावले हो जाते हैं।"

बत्रा एसोसियेट्स मजदूर : "मुझ, यशबीर सिंह, को मैनेजमेन्ट ने जुलाई 97 में निलम्बित किया था। आरोप- पत्र का मैंने जवाब दे दिया। मैनेजमेन्ट ने घरेलू जाँच नहीं करवाई। मार्च 98 से मैनेजमेन्ट ने मुझे निलम्बन भत्ता देना बन्द कर दिया और अप्रेल 98 से मेरी हाजरी लगाने से इनकार कर दिया। मैनेजमेन्ट द्वारा निलम्बन भत्ता नहीं देने की शिकायत मैंने श्रम विभाग में की। उन्होंने उसे आगे लेबर ट्रिब्युनल में बढा दिया जहाँ अभी भी मामला विचाराधीन है। हाल ही में 14.11.2000 की तारीख थी। 15 नवम्बर को 28 सैक्टर पुलिस मेरे चाचा के घर मुझे पकड़ने पहुँची। इसकी खबर मिली तब मुझे पता चला कि सरासर गैर- कानूनी कार्य कर रही मैनेजमेन्ट ने मुझे डराने- धमकाने के लिये मेरे खिलाफ पुलिस में झूठी शिकायत की है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " शॉकर डिवीजन में

मण्डी में मजदूर

★चौक में मजदूर : " देहात से यह सोच कर यहाँ आये थे कि इतनी फैक्ट्रियाँ हैं, किसी में तो काम मिल ही जायेगा। फैक्ट्रियों के चक्कर काटते- काटते हम थक गये पर नौकरी नहीं मिली। अब पेट के लिये रोज सुबह- सुबह आ कर चौक पर बैठ जाते हैं कि कोई दिहाड़ी पर ले जाये। कई दिन तो एक- डेढ बजे तक इन्तजार में बैठे रहते हैं और फिर वैसे ही लौट जाते हैं।" **★एस्कोर्ट्स मजदूर :** " अभी मैनेजमेन्ट की क्लास से पढ कर आ रहे हैं। कम्पनी के भले की सोचो, कम्पनी को फायदा कैसे हो पर माथा- पच्ची करो। उत्पादन बढाओ, क्वालिटी सुधारो, हर सैकेन्ड के पाबन्द हो। मल्टी- स्किल, मल्टी- मशीनिंग, मल्टी- जॉब में खुद मल्टी- मल्टी- मिट्टी हो जाओ।" **★हुनरमन्द मजदूर :** " यह सोच कर खूब रगड़े खाये कि हुनर सीख लूँगा तो कहीं न कहीं परमानेन्ट नौकरी लग ही जायेगी। डाई कास्टिंग का काम सीखा। पाँच- छह जगह परमानेन्ट हुआ हूँ पर कम्पनी को लड़खड़ाते देख हर जगह नौकरी छोड़ने में भलाई देखी। इधर डाई कास्टिंग में नई- नई मशीनें आई हैं। नई मशीनों ने सीखे हुये हुनर को फालतू का बना दिया है।"

ऑटोलैम्प मजदूर : " 113 मजदूर हैं, सब परमानेन्ट। काम कम हो गया है — कहते हैं कि आर्डर नहीं हैं। छोटी- छोटी बातों पर 7 को निलम्बित कर दिया है। देख रहे हैं कि कई कम्पनियाँ बन्द हो गई हैं और मजदूरों को हिसाब तक नहीं मिला है। काम ही कम हो वहाँ क्या किया जाये ? बन्द होने की राह पर दीखती कम्पनियों में क्या किया जाये ?"

एस्कोर्ट्स वरकर : "नौकरी से निकालने के लिये मैनेजमेन्ट छोटे से छोटे बहाने ढूँढ रही है। ऐसे में रविवार को तबीयत खराब हुई तो सोमवार को ड्युटी की चिन्ता ने असमय डॉक्टर का दरवाजा खटखटाने को मुझे मजबूर किया। डॉक्टर की पत्नी ने बेटाइम के लिये मुझे झिड़का और डॉक्टर के सामने मुझे गिड़गिड़ाना भी पड़ा। वैसे मैं काफी पढ़ा- लिखा हूँ और स्टाफ में हूँ।"

डी. एस. डीजल मजदूर : " मैं, चन्द्रपाल, 27 साल से नौकरी कर रहा था। मेरा नाम डी. एस. डीजल में था और 12- 13 साल से मैनेजमेन्ट मुझ से डी. एस. बोईग में ड्युटी करवा रही थी। बोइंग में पावर प्रेस पर काम करते मेरा हाथ कटा — देखिये, बस

रही है। एग्रीमेन्टों और छोटे- छोटे लालचों के जरिये मैनेजमेन्ट ने इतना वर्क लोड बढा दिया है कि बगल वाले से दुआ- सलाम भी नहीं कर सकते। इतना वर्क लोड है कि जो थूक मुँह में आता है वह सूख जाता है, निगलने के लिये जबरदस्ती करनी पड़ती है।

"बन्द होने की अफवाह फैला कर मैनेजमेन्ट ने फिर छँटनी की और अब 270 परमानेन्ट मजदूर ही बचे हैं। दो शिफ्टें कर मैनेजमेन्ट ने अप्रेन्टिसों को उत्पादन में जोत दिया है और ठेकेदारों के जरिये नये वरकर रखे हैं। चाबुक फटकारने के लिये हर दस- बारह परमानेन्टों में से एक को मैनेजमेन्ट ने ग्रुप लीडर बना दिया है और उन्हें रोज 20 रुपये एक्स्ट्रा देती है। हम में से बनाये यह ग्रुप लीडर भी हमारे सिर पर बैठते हैं। मात्र 7 मिनट में एक ट्रैक्टर असेम्बल करने की मैनेजमेन्ट- यूनियन एग्रीमेन्ट है। कई बार गुपचुप 6 मिनट में एक ट्रैक्टर की रफ्तार से मैनेजमेन्ट लाइन चला देती है। सब मजदूर कहते हैं कि बुरा हाल है। वैसे, ग्रुप लीडरों की भी आत्मा गवाही नहीं देती।"

इन्जेक्टो वरकर : " कम्पनी पूरी मनमानी कर रही है। वेतन की कोई तारीख नहीं। मजदूर को जहाँ चाहे लगा देती है और जब चाहे निलम्बित कर

मैनेजमेन्ट एक से दूसरी से तीसरी जगह काम पर लगा रही है ताकि परेशान हो कर हम नौकरी छोड़ दें। शिफ्ट समाप्त होने के ऐन वक्त साहब लोग दौरे कर के हाथ धोने में भी काँटे बन रहे हैं। लीडर तो देश के हों चाहे कम्पनी के, सब एक जैसे हैं।"

के.जी. खोसला कम्प्रेसर मजदूर : " फिर वी.आर.एस. लगाई है। मजदूरों पर तो नौकरी छोड़ने के लिये दबाव डाला ही जा रहा है, स्टाफ पर भी भारी दबाव डाल रहे हैं। चौकीदार दलीप पर मैनेजमेन्ट ने इतना दबाव डाला कि वे फैक्ट्री में बेहोश हो गये और उन्हें ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। एक इंजिनियर को उसके स्कूटर के बिना फैक्ट्री से जबरन निकाल दिया — फिर किसी दूसरे के हाथ उसका स्कूटर फैक्ट्री से बाहर भेजा। 6 नवम्बर से मैनेजमेन्ट काफी मजदूरों का ले- आफ लगा रही है। इन 10 दिनों में 100 वरकरों को जबरन नौकरी से निकाल दिया है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी.फरीदाबाद—121001

दर्पण-आईना

ए. ई. आई. इंजिनियरिंग मजदूर : " फैक्ट्री में 5-6 लैट्रीन हैं और मैनेजमेन्ट उन पर ताले लगा देती है ..."

ओम प्रिसीजन टूल्स वरकर : " पावर प्रेस का काम है। हाथ कटते रहते हैं। कुल मजदूर 25-30 ही हैं और अगस्त महीने में तो तीन वरकरों के हाथ तहस-नहस हुये। जिनकी नहीं होती उनकी ई.एस.आई. हाथ कटने पर बैक डेट से बनवा देते हैं। हस्ताक्षर 2200 पर करवाते हैं और देते महीने के 1500-1600 रुपये ही हैं।"

आटोपिन मजदूर : " 15/7 मथुरा रोड़ स्थित एक्सल डिविजन में 40-50 जो स्टाफ में हैं उन्हीं की ई.एस.आई. और पी.एफ. हैं। कम्पनी ने स्वयं 150 मजदूर और 50 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं – किसी भी मजदूर को ई. एस. आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं। ई. एस.आई. और पी. एफ. वालों ने 6 नवम्बर को छापा मारा तब सामने की तरफ उन्हें बैठा कर मैनेजमेन्ट खिलाती-पिलाती रही और पिछले गेट से सब मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया। हमें 10 से 12 बजे तक पार्क में बैठाये रखा। आठ-दस मजदूर जो फैक्ट्री में छूट गये थे उनके नाम छापा मारने वाले लिख कर ले गये।

" हैल्परों को 1900 रुपये महीना कह कर मैनेजमेन्ट रखती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं देती और महीने के तीसों दिन काम करो तब 1600 रुपये देती है। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 1500 रुपये देती है।

" सितम्बर की तनखा लड़-झगड़ कर हम ने दीवाली से एक दिन पहले, 25 अक्टूबर कौ ली। यह कह कर कि कम्पनी के पास पैसे नहीं हैं, हैल्परों को 500-500 रुपये दे दिये थे पर ऑपरेटर-कारीगरों ने यह लेने से इन्कार कर दिया। काम बन्द हो गया। शाम को 6 बजे मैनेजमेन्ट ने हैल्परों-ऑपरेटरों को सितम्बर की तनखा देनी शुरू की और रात 8 बजे तक दी। मैनेजमेन्ट ने दीवाली पर स्टाफ को कम्बल दिया और मजदूरों को सूखा मिठाई का डिब्बा।"

लुधियाना से..... (पेज एक का शेष)

के मैंने यूनियन के द्वारा फैक्ट्री पर केस कर दिया। मेरा केस दो साल लेबर दफ्तर में चलता रहा, फिर केस चण्डीगढ़ गया और वहाँ से आने के बाद लेबर कोर्ट में चलने लगा है। इस बीच फैक्ट्री बन्द कर दी गई है तथा प्लॉट भी बेच दिया गया है और मेरी तारीखें कोर्ट में चल रही हैं। पता नहीं तारीखें कब तक चलती रहेंगी – मुझे दिहाड़ी तोड़ कर कोर्ट के चक्कर लगाने पड़ते हैं। कहावत वाली हो गई है कि जितने का मुर्गा नहीं उतने का मसाला।

" दशमेश नगर स्थित **रघुबीर गेयर (इण्डिया)** में लगभग 300 वरकर काम करते हैं। फण्ड 20-25 का कटता है और ई.एस.आई. कार्ड 5 वरकरों को दिये हैं। फोरमैन के चमचे वरकरों को हर दम तँग करते रहते हैं। सरकारी स्केल भी नहीं लागू है – तनखा 1000 या 1200 रुपये महीना। बोनस किसी को नहीं देते। माँग करने पर कहते हैं कि हमारी मर्जी, काम करना है तो करो नहीं तो हिसाब ले लो। सरकारी अधिकारी चैकिंग के लिये आते हैं तो उनके मुँह पहले ही रुपयों से भर देते हैं।"

ओखला से .....

" मैंने एक वर्ष **शकुन्तला एक्सपोर्ट**, डी 1/1 ओखला फेज –1 में काम किया लेकिन मुझे वेतन सिर्फ 8 महीने का मिला। चार महीनों का अपना वेतन निकालने के लिये मैंने यूनियन का सहारा लिया। कम्पनी से दस कदम और आगे निकली यूनियन – मेरे 5000 निकालने के लिये 2000 रुपये खा गई।

" पहले कम्पनी का नाम **हैवी इंजिनियरिंग** था और अब **आटो ग्राफ** है। हम 150 मजदूर हैं और ज्यादातर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है। चोट लगने पर मैनेजमेन्ट इलाज नहीं करवाती, ज्यादा चोट जिसे लग जाती है उसे नौकरी से निकाल देती है। पाँच साल से प्रोविडेन्ट फण्ड काटा जा रहा है पर जमा नहीं करवाया जा रहा। इस बारे में हम ने कई बार भविष्य निधि वालों से शिकायतें की हैं पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अब तो हद हो गई है – चार महीनों से कम्पनी ने वेतन रोक रखा है।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है। महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें, मजदूर लाइब्रेरी आयें।

विकल्पों के लिये प्रश्न (9)

क्षणिक की हवस

– लालाराम ने 1992 में लड़के की शादी में 40 हजार रुपये खर्च किये। बचत से पूरा नहीं पड़ रहा था इसलिये 5 हजार उधार लिये। पाँच रुपये सैंकड़ा प्रतिमाह के हिसाब से 250 रुपये हर महीने ब्याज के देते-देते 22 हजार रुपये लालाराम ब्याज में दे चुका है।

– मेरा पटाखा तुम्हारे पटाखे से ज्यादा जोर से बजा।

– स्वयं को सिद्ध कर दिया ! सब को परास्त कर चैम्पियन बन गई।

– जब भी छुट्टी ले गाँव गया हूँ साबुन-सिगरेट-चाय-कपड़ों की चमक को दिखाया है। नौकरी के बारे में, यहाँ की जिन्दगी के बारे में झूठ पर झूठ बोली है। इज्जत के लिये तीस साल से बेइज्जतियों पर परदे डालता रहा हूँ।

उपरोक्त की वजह नासमझी-नादानी-अज्ञानता नहीं हैं। फैशन के फेर में पड़ना, चोंचलेबाजी का शिकार होना भी उपरोक्त के कारण नहीं हैं।

बगल वाले से-प्रियजन से इक्कीस होने-दीखने में खुशी मिलती है और क्षण-भर की खुशी के लिये भी बेहद तड़फ है। बात ऊपर रखने की बात का, शिशुओं-बच्चों के गुण-अवगुण में बाजी मारने का जुनून नजर आता है।

तरसते हैं एक खुशगवार शाम के लिये, पल-भर की इज्जत के लिये। साल में एक बार, जीवन में एक बार ... एक दिन की चमक-दमक के लिये खटते हैं। कुछ खटते हैं हफ्ते में 6 दिन, रोज 8 घण्टे। कई खटते हैं सप्ताह के सातों दिन, 12 घण्टे प्रतिदिन। कुछ को परेशानी होती है छुट्टी के दिन खटने का जुगाड़ नहीं बैठा पाने पर।

दरअसल, यह है वर्तमान। इसमें सामान्य तौर पर जीवन कठिन से कठिनतर हो रहा है। इसमें सामान्य तौर पर जलील होना पड़ता है – रोजमर्रा की जिन्दगी में जलालत बढती जा रही है। हर रोज, हर जगह, हर कदम पर बेइज्जत होना सामान्य प्रक्रिया का अँग है। और, वर्तमान में असुरक्षा सुरसा के मुँह की तरह बढ़ रही है।

ऐसे में क्षणिक सुख की चाह का व्यापक होना स्वाभाविक है। इज्जत की चाहत द्वारा हवस का रूप ले लेना कुदरती है। इस-उस इज्जत के नाम पर वास्तविकता पर पर्दे दर पर्दे डालना, झूठ पर झूठ बोलना और बेइज्जतियों को ढोने को जायज ठहराने के लिये तर्क-कुतर्क का सैलाब-बाढ। इसलिये फैशन को चोंचलेबाजी कहना नाकाफी है, फैशन तो वर्तमान का लक्षण है। क्षणिक की हवस वर्तमान की चारित्रिकता है।

दूसरों से इक्कीस होने में मिलती कुण्ठित खुशी, झूठी इज्जत और क्षणिक खुशी के बदबूदार संकरेपन में हम में से प्रत्येक का जीवन सिकुड़ता, सिमटता, बर्बाद होता जा रहा है। हम कर क्या रहे हैं ?

प्रत्येक का जीवन सामान्य तौर पर खुशी-प्रसन्नता लिये हो यह किसी भी नई समाज रचना के लिये प्रस्थान-बिन्दु है। क्षणिक की हवस के दलदल से निकालने की क्षमता तालमेलों में नजर आती है। हर प्रकार की होड़-प्रतियोगिता की जड़ खोदने वाले तालमेलों के बारे में माथा-पच्ची की जरूरत है। (जारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।